अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के 82वें स्थापना दिवस समारोह में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–25.12.2016, समय–पूर्वा॰ 10:00 बजे, स्थान–कोलकाता)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के 82वें स्थापना समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित लेफ्टीनेंट जनरल दुष्यन्त सिंह जी, सम्मेलन के अध्यक्ष श्री प्रहलाद राय अगरवाल जी, महासचिव श्री शिव कुमार लोहिया जी, श्री केशरीकांत शर्मा 'केशरी जी', श्री दुलाराम सहारण जी, श्री कैलाशपति तोदी जी, श्री संतोष सर्राफ जी, श्री संजय हरलालका जी, श्री दिनेश कुमार जैन जी, श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका जी, आगत अतिथिगण, सम्मेलन के प्रतिभागीगण, मीडिया– प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के 82वें वर्षगांठ समारोह में शामिल होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस शुभ अवसर पर मैं सम्मेलन के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ। यह संतोष का विषय है कि सम्मेलन ने अपने 82 वर्ष के जीवनकाल में राष्ट्र एवं समाज के विकास में अपना अतुलनीय योगदान दिया है।

मारवाड़ी समाज का राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन एवं स्वतंत्र भारत में देश के विकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सेठ जमनालाल बजाज एवं घनश्याम दास बिड़ला का स्वतंत्रता– आन्दोलन में आर्थिक एवं सामाजिक योगदान को कौन नहीं जानता। गाँधीजी के नेतृत्व में ''करो या मरो'' आन्दोलन में मारवाड़ी समाज के लोगों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया एवं गिरफ्तार भी हुए। गिरफ्तार होने वालों में डॉ राममनोहर लोहिया, बृजलाल वियाणी, सेठ गोविन्द दास, बसंतलाल मुरारका, सीताराम सेकसरिया, मूलचन्द्र अग्रवाल, भगीरथ कनोड़िया, विजय सिंह नाहर, भंवरमल सिंघी एवं सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा आदि प्रमुख थे।

देश में कोई ऐसा स्थान नहीं, जहाँ मारवाड़ी समाज के लोग न रहते हों। प्रारम्भ में मारवाड़ी से केवल व्यापार करने वाले जाति का भान होता था। पर आज यह व्यापार के साथ–साथ कला, संस्कृति, साहित्य, तकनीक, शिक्षा एवं अन्यान्य क्षेत्रों में अपना उल्लेखनीय स्थान बना रहा है एवं देश की प्रगति में उल्लेखनीय योगदान दे रहें है। यह जानकर मुझे खुशी है कि सम्मेलन का उद्देश्य –''महारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति'' है एवं सम्मेलन के मुख्य कार्यक्रम समाज सुधार, राष्ट्रीय एकता एवं समरसता है।

सम्मेलन मारवाड़ी समाज की एक वैचारिक संस्था है। समाज सुधार के क्षेत्र में पर्दा–प्रथा उन्मूलन, नारी–शिक्षा–प्रसार, विधवा–विवाह–समर्थन, दहेज–प्रथा–उन्मूलन, फिजूलखर्ची एवं आडम्बर जैसे अनक महत्त्वपूर्ण विषयों पर सम्मेलन ने सार्थक हस्तक्षेप किया है।

मारवाड़ी समाज द्वारा पूरे देश में निर्मित धर्मशाला, मंदिर, विद्यालय कॉलेज एवं अस्पताल आदि दर्शाते हैं कि समाज ने अपना सामाजिक दायित्व को पूरी तरह निभाया है। हमारी सनातन संस्कृति का आदर्श रहा है कि जो भी सम्पत्ति एवं साधन हमारे हाथ में है, वे हमारे पास थाती के रूप में हैं। उनका उपयोग हमें उन्हीं बातों के लिए करने का अधिकार है, जिनमें वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ियों का हित–साधन हो। महात्मा गाँधी ने भी इन्हीं बातों को अपने 'ट्रस्टीसीप' के सिद्धांत में समाहित किया था। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी किसी भी समाज के सम्यक् विकास के लिए उसमें शिक्षा के समुचित प्रसार पर जोर देते थे। शिक्षा देश और समाज की मौजूदा हर प्रकार की चुनौतियों से निपटने का एक कारगर जरिया होती है। गाँधीजी समाज में शांति, समरसता और न्याय के लिए शिक्षा में मानवीय और नैतिक तत्वों के समाहार पर जोर देते थे। गाँधीजी का वक्तव्य है कि–''सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को सच्चा और अच्छा मनुष्य बनाये। उसके समग्र विकास में योगदान दे और उसे कर्त्तव्य–पालन के लिए प्रेरित करे। विद्या–प्राप्ति मानवता और नैतिकता की

रक्षा से जुड़ी होनी चाहिए।'' मेरा मानना है कि जो अच्छा मनुष्य है; यदि वह हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू होगा, यदि वह मुस्लिम है तो अच्छा मुस्लिम होगा, यदि अध्यापक है तो अच्छा अध्यापक होगा, यदि राजनेता है तो वह अच्छा राजनेता होगा, यदि व्यवसायी है तो अच्छा व ईमानदार व्यवसायी होगा, अर्थात् अच्छा मनुष्य समाज के हर क्षेत्र में अच्छा ही होगा। शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए हमारे भारतीय संविधान के प्रमुख रचयिता डॉ॰ अम्बेदकर कहते हैं कि –''शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को प्रबुद्ध बनाकर सामाजिक शक्तियों को संगठित कर सकता है और अन्याय, शोषण एवं बुराइयों का अंत करने में सहायक है। शिक्षा के जरिये ही मनुष्य आंतरिक और बाह्य गुलामी से लड़ सकता है और यही उसे व्यक्तिगत एवं सामाजिक मुक्ति भी दिला सकती है।'' मुझे उम्मीद है कि आपका संगठन भी अपने सभी सदस्यों में शैक्षिक विकास की भावना पुरजोर तौर पर समाहित कर रहा होगा।

मारवाड़ी समाज का इतिहास गौरवमय रहा है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन' पूरे समाज को एक सूत्र में पिरोकर उसकी ऊर्जा को राष्ट्रहित में कारगर ढंग से प्रयुक्त करने में संलग्न है। समाज सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है। मुझे आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि सम्मेलन अपने उद्देश्यों की ओर सतत् प्रयत्नशील रहेगा और सफलता प्राप्त करेगा। नया वर्ष शीघ्र ही प्रारंभ होने वाला है। नववर्ष हम सबके लिए सुखमय, समृद्धिमय और शांतिमय सिद्ध हो, यह मेरी मंगलकामना है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।